



Mr. Pooja soni

24 Jun 1991

04:30 PM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119150101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 24/06/1991
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 16:30:00 घंटे
इष्ट _____: 27:40:23 घटी
स्थान _____: Jabalpur
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:19:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:14 घंटे
साम्पातिक काल _____: 10:28:12 घंटे
सूर्योदय _____: 05:25:50 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:59:03 घंटे
दिनमान _____: 13:33:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 08:42:33 मिथुन
लग्न के अंश _____: 06:25:57 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अनुराधा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: साध्य
करण _____: तैत्तिल
गण _____: देव
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नी-निष्ठा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	आषाढ़	3
पंजाबी	संवत : 2048	आषाढ़	10
बंगाली	सन् : 1398	आषाढ़	9
तमिल	संवत : 2048	आनी	10
केरल	कोल्लम : 1166	मिथुनम	9
नेपाली	संवत : 2048	आषाढ़	10
चैत्रादि	संवत : 2048	ज्येष्ठ	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2048	ज्येष्ठ	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 27:36:08
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 06:39:19 घंटे
जन्म योग _____ : अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 25:48:01 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 14:30:44 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 31:25:30
भभोग _____ : 66:48:48
भोग्य दशा काल _____ : शनि 10 वर्ष 0 मा 13 दि

घात चक्र

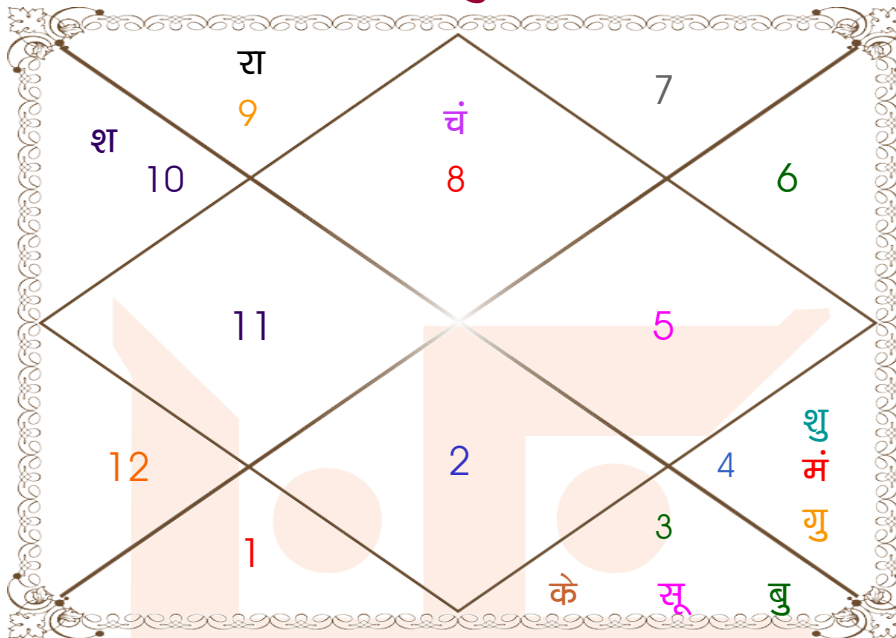
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

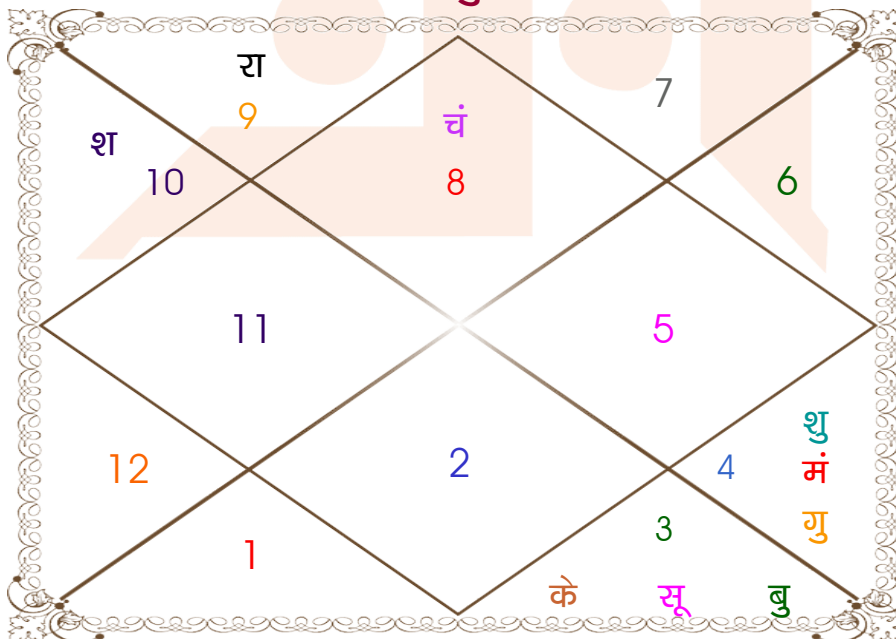
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			के सू बु
			शु मं गु
श			
रा	चं ल		

लग्न कुंडली

के बु	सू		
शु मं गु			
		श	
		रा	ल चं

विंशोत्तरी
शनि 10वर्ष 0मा 13दि
शनि

24/06/1991

09/07/2102

शनि	08/07/2001
बुध	08/07/2018
केतु	08/07/2025
शुक्र	08/07/2045
सूर्य	08/07/2051
चन्द्र	08/07/2061
मंगल	07/07/2068
राहु	08/07/2086
गुरु	09/07/2102

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 1मा 10दि
भ्रामरी

04/08/2025

04/08/2029

भ्रामरी	13/01/2026
भद्रिका	04/08/2026
उल्का	05/04/2027
सिद्धा	14/01/2028
संकटा	04/12/2028
मंगला	13/01/2029
पिंगला	04/04/2029
धान्या	04/08/2029

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

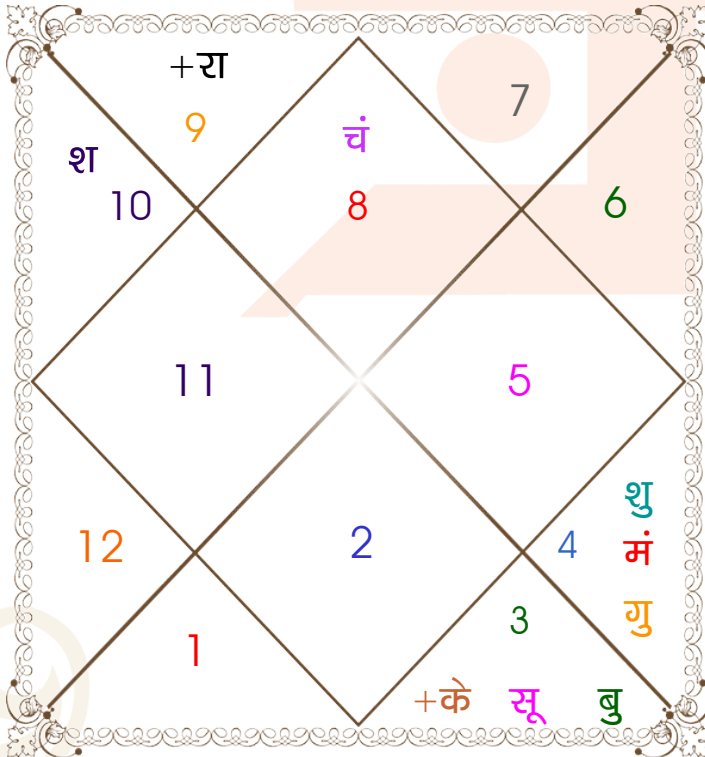
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	06:25:57	315:12:30	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	---
सूर्य			मिथु	08:42:33	00:57:13	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	09:37:21	11:58:31	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	नीच राशि
मंगल			कर्क	23:26:36	00:36:08	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	नीच राशि
बुध	अ		मिथु	17:25:29	02:04:41	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	शुक्र	स्वराशि
गुरु			कर्क	19:21:38	00:11:24	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	शुक्र	उच्च राशि
शुक्र			कर्क	23:37:38	00:51:49	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	शत्रु राशि
शनि	व		मक	11:58:30	00:03:19	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	स्वराशि
राहु	व		धनु	25:14:18	00:02:24	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	नीच राशि
केतु	व		मिथु	25:14:18	00:02:24	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	18:28:54	00:02:23	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
नेप	व		धनु	22:00:01	00:01:34	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो	व		तुला	24:08:20	00:01:04	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
दशम भाव			सिंह	11:29:11	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	बुध	--

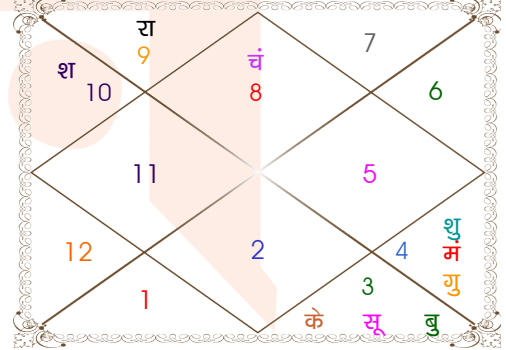
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:33

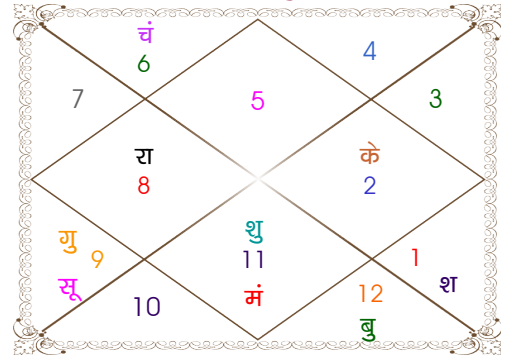
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836, 9425878602

astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 22:16:29	वृश्चिक 06:25:57
2	वृश्चिक 22:16:29	धनु 08:07:01
3	धनु 23:57:34	मकर 09:48:06
4	मकर 25:38:38	कुम्भ 11:29:11
5	कुम्भ 25:38:38	मीन 09:48:06
6	मीन 23:57:34	मेष 08:07:01
7	मेष 22:16:29	वृष 06:25:57
8	वृष 22:16:29	मिथुन 08:07:01
9	मिथुन 23:57:34	कर्क 09:48:06
10	कर्क 25:38:38	सिंह 11:29:11
11	सिंह 25:38:38	कन्या 09:48:06
12	कन्या 23:57:34	तुला 08:07:01

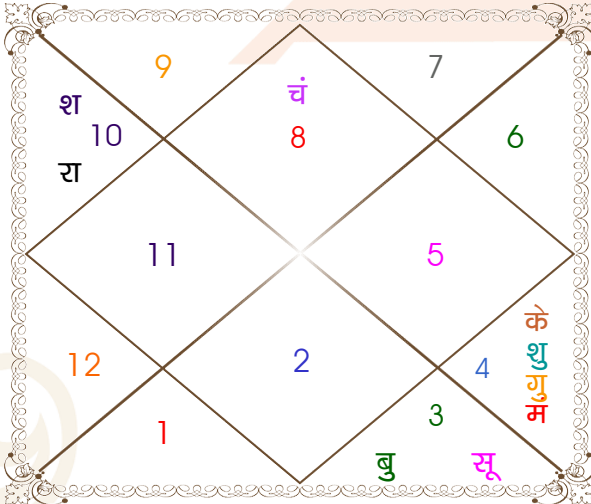
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	06:25:57
2	धनु	06:11:19
3	मकर	08:06:44
4	कुम्भ	11:29:11
5	मीन	13:29:35
6	मेष	11:43:28
7	वृष	06:25:57
8	मिथुन	06:11:19
9	कर्क	08:06:44
10	सिंह	11:29:11
11	कन्या	13:29:35
12	तुला	11:43:28

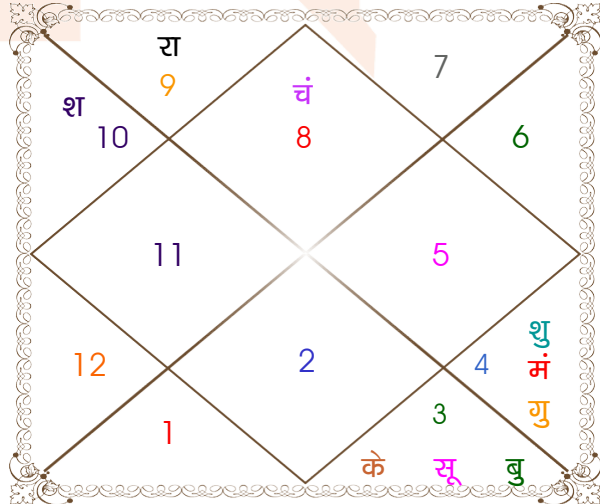
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 10 वर्ष 0 मास 13 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
24/06/1991	08/07/2001	08/07/2018	08/07/2025	08/07/2045
08/07/2001	08/07/2018	08/07/2025	08/07/2045	08/07/2051
00/00/0000	बुध 04/12/2003	केतु 04/12/2018	शुक्र 06/11/2028	सूर्य 25/10/2045
00/00/0000	केतु 30/11/2004	शुक्र 03/02/2020	सूर्य 06/11/2029	चंद्र 26/04/2046
24/06/1991	शुक्र 01/10/2007	सूर्य 10/06/2020	चंद्र 08/07/2031	मंगल 01/09/2046
शुक्र 28/06/1992	सूर्य 07/08/2008	चंद्र 09/01/2021	मंगल 06/09/2032	राहु 26/07/2047
सूर्य 10/06/1993	चंद्र 06/01/2010	मंगल 07/06/2021	राहु 07/09/2035	गुरु 14/05/2048
चंद्र 10/01/1995	मंगल 03/01/2011	राहु 26/06/2022	गुरु 08/05/2038	शनि 26/04/2049
मंगल 18/02/1996	राहु 23/07/2013	गुरु 02/06/2023	शनि 08/07/2041	बुध 02/03/2050
राहु 25/12/1998	गुरु 29/10/2015	शनि 10/07/2024	बुध 07/05/2044	केतु 08/07/2050
गुरु 08/07/2001	शनि 08/07/2018	बुध 08/07/2025	केतु 08/07/2045	शुक्र 08/07/2051
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
08/07/2051	08/07/2061	07/07/2068	08/07/2086	09/07/2102
08/07/2061	07/07/2068	08/07/2086	09/07/2102	00/00/0000
चंद्र 07/05/2052	मंगल 04/12/2061	राहु 21/03/2071	गुरु 25/08/2088	शनि 12/07/2105
मंगल 07/12/2052	राहु 22/12/2062	गुरु 13/08/2073	शनि 08/03/2091	बुध 21/03/2108
राहु 07/06/2054	गुरु 28/11/2063	शनि 19/06/2076	बुध 13/06/2093	केतु 30/04/2109
गुरु 07/10/2055	शनि 06/01/2065	बुध 06/01/2079	केतु 20/05/2094	शुक्र 25/06/2111
शनि 08/05/2057	बुध 03/01/2066	केतु 25/01/2080	शुक्र 18/01/2097	00/00/0000
बुध 07/10/2058	केतु 01/06/2066	शुक्र 25/01/2083	सूर्य 06/11/2097	00/00/0000
केतु 08/05/2059	शुक्र 01/08/2067	सूर्य 19/12/2083	चंद्र 08/03/2099	00/00/0000
शुक्र 06/01/2061	सूर्य 07/12/2067	चंद्र 19/06/2085	मंगल 12/02/2100	00/00/0000
सूर्य 08/07/2061	चंद्र 07/07/2068	मंगल 08/07/2086	राहु 09/07/2102	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 10 वर्ष 0 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र 08/07/2025 06/11/2028	शुक्र - सूर्य 06/11/2028 06/11/2029	शुक्र - चंद्र 06/11/2029 08/07/2031	शुक्र - मंगल 08/07/2031 06/09/2032	शुक्र - राहु 06/09/2032 07/09/2035
शुक्र 27/01/2026 सूर्य 28/03/2026 चंद्र 08/07/2026 मंगल 17/09/2026 राहु 18/03/2027 गुरु 28/08/2027 शनि 08/03/2028 बुध 27/08/2028 केतु 06/11/2028	सूर्य 24/11/2028 चंद्र 25/12/2028 मंगल 15/01/2029 राहु 11/03/2029 गुरु 29/04/2029 शनि 25/06/2029 बुध 16/08/2029 केतु 06/09/2029 शुक्र 06/11/2029	चंद्र 27/12/2029 मंगल 01/02/2030 राहु 03/05/2030 गुरु 23/07/2030 शनि 27/10/2030 बुध 22/01/2031 केतु 26/02/2031 शुक्र 08/06/2031 सूर्य 08/07/2031	मंगल 02/08/2031 राहु 05/10/2031 गुरु 01/12/2031 शनि 06/02/2032 बुध 07/04/2032 केतु 01/05/2032 शुक्र 11/07/2032 सूर्य 02/08/2032 चंद्र 06/09/2032	राहु 18/02/2033 गुरु 14/07/2033 शनि 03/01/2034 बुध 07/06/2034 केतु 10/08/2034 शुक्र 09/02/2035 सूर्य 05/04/2035 चंद्र 05/07/2035 मंगल 07/09/2035
शुक्र - गुरु 07/09/2035 08/05/2038	शुक्र - शनि 08/05/2038 08/07/2041	शुक्र - बुध 08/07/2041 07/05/2044	शुक्र - केतु 07/05/2044 08/07/2045	सूर्य - सूर्य 08/07/2045 25/10/2045
गुरु 15/01/2036 शनि 17/06/2036 बुध 02/11/2036 केतु 29/12/2036 शुक्र 09/06/2037 सूर्य 28/07/2037 चंद्र 17/10/2037 मंगल 13/12/2037 राहु 08/05/2038	शनि 07/11/2038 बुध 20/04/2039 केतु 26/06/2039 शुक्र 05/01/2040 सूर्य 03/03/2040 चंद्र 07/06/2040 मंगल 14/08/2040 राहु 03/02/2041 गुरु 08/07/2041	बुध 01/12/2041 केतु 31/01/2042 शुक्र 22/07/2042 सूर्य 12/09/2042 चंद्र 07/12/2042 मंगल 05/02/2043 राहु 11/07/2043 गुरु 26/11/2043 शनि 07/05/2044	केतु 01/06/2044 शुक्र 11/08/2044 सूर्य 02/09/2044 चंद्र 07/10/2044 मंगल 01/11/2044 राहु 04/01/2045 गुरु 02/03/2045 शनि 08/05/2045 बुध 08/07/2045	सूर्य 13/07/2045 चंद्र 22/07/2045 मंगल 29/07/2045 राहु 14/08/2045 गुरु 29/08/2045 शनि 15/09/2045 बुध 01/10/2045 केतु 07/10/2045 शुक्र 25/10/2045
सूर्य - चंद्र 25/10/2045 26/04/2046	सूर्य - मंगल 26/04/2046 01/09/2046	सूर्य - राहु 01/09/2046 26/07/2047	सूर्य - गुरु 26/07/2047 14/05/2048	सूर्य - शनि 14/05/2048 26/04/2049
चंद्र 09/11/2045 मंगल 20/11/2045 राहु 17/12/2045 गुरु 11/01/2046 शनि 09/02/2046 बुध 07/03/2046 केतु 17/03/2046 शुक्र 17/04/2046 सूर्य 26/04/2046	मंगल 03/05/2046 राहु 22/05/2046 गुरु 08/06/2046 शनि 29/06/2046 बुध 17/07/2046 केतु 24/07/2046 शुक्र 15/08/2046 सूर्य 21/08/2046 चंद्र 01/09/2046	राहु 20/10/2046 गुरु 03/12/2046 शनि 24/01/2047 बुध 11/03/2047 केतु 31/03/2047 शुक्र 24/05/2047 सूर्य 10/06/2047 चंद्र 07/07/2047 मंगल 26/07/2047	गुरु 03/09/2047 शनि 20/10/2047 बुध 30/11/2047 केतु 17/12/2047 शुक्र 04/02/2048 सूर्य 18/02/2048 चंद्र 14/03/2048 मंगल 31/03/2048 राहु 14/05/2048	शनि 08/07/2048 बुध 26/08/2048 केतु 15/09/2048 शुक्र 12/11/2048 सूर्य 29/11/2048 चंद्र 28/12/2048 मंगल 17/01/2049 राहु 10/03/2049 गुरु 26/04/2049

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 5
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

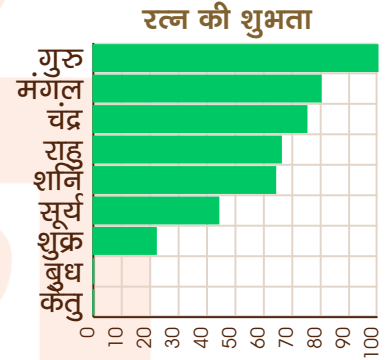
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	80%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	75%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
गोमेद	राहु	66%	धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	64%	पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	44%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि
हीरा	शुक्र	22%	नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	0%	दुर्घटना, हानि
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	08/07/2001	19%	62%	67%	0%	100%	34%	76%	72%	0%
बुध	08/07/2018	53%	62%	80%	0%	100%	34%	64%	66%	0%
केतु	08/07/2025	19%	62%	86%	0%	100%	34%	51%	53%	0%
शुक्र	08/07/2045	19%	62%	80%	0%	100%	47%	70%	72%	0%
सूर्य	08/07/2051	59%	81%	86%	0%	100%	0%	51%	53%	0%
चंद्र	08/07/2061	53%	88%	80%	0%	100%	22%	64%	53%	0%
मंगल	07/07/2068	53%	81%	92%	0%	100%	22%	64%	53%	0%
राहु	08/07/2086	19%	62%	67%	0%	100%	34%	70%	78%	0%
गुरु	09/07/2102	53%	81%	86%	0%	100%	0%	64%	66%	0%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
अशुभ
सम
अशुभ
सम

क्षेत्र

सुख
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास

आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, कोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(08/07/2018 - 08/07/2025)

केतु की महादशा 08/07/2018 को आरम्भ और 08/07/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रेच्युइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाई उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्य में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

**महादशा :- शुक्र
(08/07/2025 - 08/07/2045)**

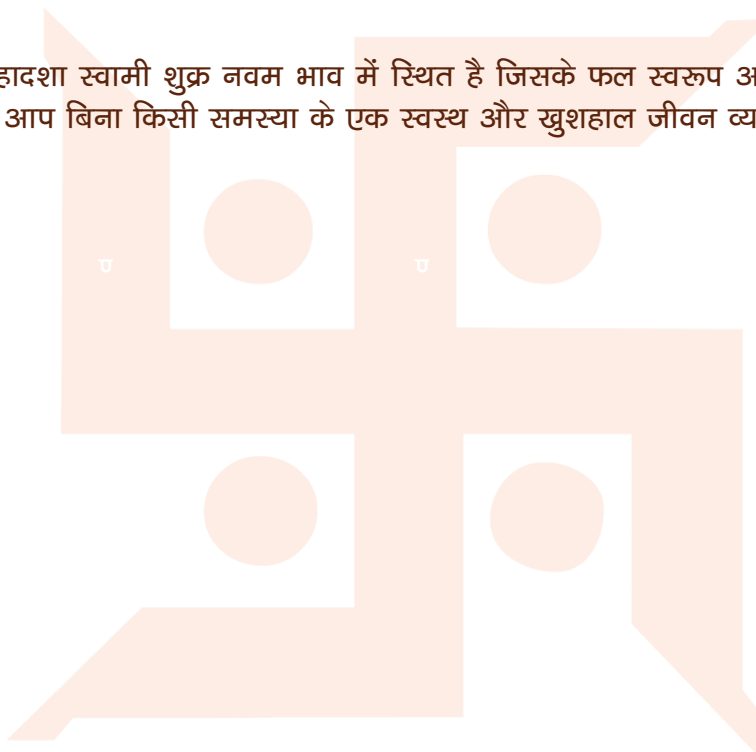
आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 08/07/2025 को आरम्भ होकर 08/07/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(08/07/2025 - 06/11/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 08/07/2025 को प्रारंभ होकर 08/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 08/07/2025 को प्रारंभ होकर 06/11/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 3रे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा, वाणी मृदु होगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बिगड़ सकते हैं, जिससे धनहानि संभव है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य
(06/11/2028 - 06/11/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 08/07/2025 को प्रारंभ होकर 08/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 06/11/2028 को प्रारंभ होकर 06/11/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में बहुत सी अप्रत्याशित घटनाएं अचानक घट सकती हैं, जिनमें से कुछ का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ेगा। फिर भी, इस अवधि में आप एक कुशल वक्ता बनेंगे। निवेश या सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है। जीवन में काफी बाधाएं आएंगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के निम्न टोटके आजमाएं।

- 1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- 2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।
- 3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - चन्द्र
(06/11/2029 - 08/07/2031)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 08/07/2025 को प्रारंभ हुई थी और 08/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 06/11/2029 से प्रारंभ होकर 08/07/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

लग्न में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बहुत मूड़ी और संवेदनशील हो सकते हैं। कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आप और आपके जीवनसाथी सुंदर हैं। विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे जिससे कुछ परेशानी में फंस सकते हैं, अतः सावधान रहें।

घरेलू सुख उत्तम रहेगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। समय-समय पर बेचैन या कल्पनाशील हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।